
72 Melakarta by Shri Venkatakavi

श्रीवेङ्कटविवरचित आलत्तर मेळकर्ता

Document Information

Text title : bAhattarameLAKartA

File name : bAhattarameLAKartA.itx

Category : misc, kRitI, marATHI

Location : doc_z_misc_general

Transliterated by : Pallasena Narayanaswami ppnswami gmail.com

Proofread by : Pallasena Narayanaswami, Sunder Hattangadi, NA

Description/comments : from The Samgraha Chudamani Of Govinda Pages 290-326, also see page 46-48 for the list

Latest update : June 14, 2019

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

September 16, 2023

sanskritdocuments.org

श्रीवेङ्कटकविविरचित् बाहुत्तर मेळकर्ता



। आदिताल ।

यार्थें साहित्य । लावणीध्रुपदसह ।

ध्रुपदा विना मणालयां । मध्यमावती गीती ।

श्रीमान् जो करी राज्य विष्णुसम चव्दानवंशज भूपमणी ।

रघुवर सुकृपाकटाक्षलब्ध त्रिदशाधिपसम विभवधणी ॥

(शुद्धमध्यममेल)

श्रीसमकनकाङ्गी शिवनृपपुत्रीपति विलसे सदरी ॥ १ ॥

रत्नाङ्गीसी आंगी लेउनि दिव्यकिरीटलिं लसे शिरी ॥ २ ॥

सकलन गानमूर्ति शोभवी धनद विभवि या पृथ्विवरी ॥ ३ ॥

वनस्पतीथी सरस कृणें बडु आणुनि ठेविति नजर बरी ॥ ४ ॥

मानवती हे पाळुनि सर्वलिं करिती श्लाघा परोपरी ॥ ५ ॥

लसे श्रुती संतानरूपि बडु कृणे असे डो निरन्तरी ॥ ६ ॥

सेनापति हा सिद्धयि पुढती लक्ष दैतसे आज्ञेवरी ॥ ७ ॥

लोकी अनुमतो वीन रामपद पर्धी अलिसा दिनरात्री ॥ ८ ॥

सवत्सधेनुका सालंकृत हे गजोष्ट्र डय युग हे ભારી ॥ ९ ॥

नाटकप्रिया गणिका ज्या कीं गान करिति बडु सुस्वरी ॥ १० ॥

कोडिलप्रिया पडिली साजे रम्भेडुनी हे सुकुमारी ॥ ११ ॥

रुपावती डी उर्वशीपरी ભરતાગમ નિપુણા દુસરી ॥ १ ॥ ॥ श्री ॥ ॥ १२ ॥

गायकप्रिया गीती गाती नटनाभिनया द्यावीती ॥ १३ ॥

वकुलाभरण शोभति यांसयि पाळुनि जन थक्कित डोती ॥ १४ ॥

करिती मायामाणवगौणाय्या ङ्या अरव्या डो डडडती ॥ १ॡ ॥
 यकवाकसड सुस्तनि यांप्रति निरभुनि विटजन डनि डुलती ॥ १ॢ ॥
 सूर्यकान्त सुडनाने लसविति कर्ण अङ्कि नग अडुले ती ॥ १ॣ ॥
 डटकडडरी डैडङ्गि नेसुनी कर्णुडि कङ्कुडि ङणकविति ॥ १। ॥
 डङ्कुण करङ्कारध्वनि अरि डरिसा तुडडी अडु सुङ्गाकृती ॥ १॥ ॥
 डैरवनट डैरवी डिं अैकुनि डडुडि आश्वर्या करिती ॥ २० ॥
 कीरवाङ्गि कणवांतिङ्गि सुस्वर सताल लययुत ङ्या गाती ॥ २१ ॥
 डेडि डरडरड्रियाति गङ्गा शिवशिडिं यङ्कुनी डडडे ती ॥ २२ ॥
 गौरिडनोडरि शिवाङ्गी असुनी डडडयाशी करि विनती ॥ २३ ॥
 डे की वरुणप्रियाडी सुडवी डडिडनीराय्या डिसैं सती ॥ २ ॥ ॥ श्री ॥ ॥ २ॣ ॥
 डाररङ्गनी रति डुलुडि डडडे अनङ्गडति अनुकूल अरै ॥ २ॡ ॥
 यारुकेशि डे यडडर विङ्गितां डोती कङ्कुण ङणलडर ॥ २ॢ ॥
 सरसाङ्गी डे डसी धाली वारा डणुडणु सुडकड ॥ २ॣ ॥
 डरिडडडुङ्गु नाय लङ्गिडी डोडिल राडड निरन्तर ॥ २। ॥
 धीरशङ्कराडरडङ्गु डधुराङ्गडडडुग डसवर ॥ २॥ ॥
 नागानन्दिनीसडड अडोडड डडडराङ्गिया ङनक अरै ॥ ३० ॥
 रिडु डशु यागप्रिया डति डो ङयायी डडडती डे शूर ॥ ३१ ॥
 स्वसेवकी अनुरागवर्धनी डुड्ढि असे की निरन्तर ॥ ३२ ॥
 गाङ्गेयडूषणुडी डूषित गौरी श्रीय्या सुकृडेसीं डडर ॥ ३३ ॥
 वागधीश्वरी डेणसे डुडिं ङणतसे डैं षट्शास्त्र ॥ ३ॣ ॥
 शूलिनी ती डरिनीति ङयायी डडडिति नय विड्राङ्गवर ॥ ३ॡ ॥
 न डोय यङ्गल नाटे डयाडुडि डध्यड डेशीं डड यतुर ॥ ३ ॥ ॥ श्री ॥ ॥ ३ॢ ॥
 (ड्रतिडध्यडडेल)
 श्रित सुडर सालगा विनृडं ड्रति डध्यड डत्तड निवडितसे ॥ ३ॣ ॥
 ङलार्णवयि गडडीरडणुडी ङो डेडडड्रिसड डैरिं असे ॥ ३। ॥

आलवराणी याये शुभ भुङ्क्ते सुखरिता भुङ्क्ते असे ॥ ३९ ॥
 श्री नवनीतापडारि यदुवर साय कलियुगीं भासतसे ॥ ४० ॥
 पावनीय श्रीरामकथा श्रद्धेने प्रतिदिन औक्तसे ॥ ४१ ॥
 रघुप्रिया दृढ भक्ती ज्यायी तेणे छष्टि साधितसे ॥ ४२ ॥
 स्वीय गवाम्भोधीस यन्द्रसा उल्लासाते देत असे ॥ ४३ ॥
 भवप्रियाणु अण्डिक कृपाणू यासम ढायी वाटतसे ॥ ४४ ॥
 शुभापन्त वराणीसड तू लाभ भुङ्क्ते द्विज संतोषे ॥ ४५ ॥
 दाउनि पथ षड्भिर्मागिणि जिंकी रिपुला युक्त दिसे ॥ ४६ ॥
 सुवर्णाङ्गी विजयश्री येउनि माण धालिते भुङ्क्ते ॥ ४७ ॥
 दिव्यमणीया डारडी त्यावरी धाली शयीपतिसम भासे । ४ ॥ ॥ श्री ॥ ॥ ४८ ॥
 भुङ्क्ते शधवलाम्भरीछि व्यापुनी गाजतसे देशोदेशीं ॥ ४९ ॥
 रामनाम नारायणि जपसा जपत असे भुङ्क्ते श्रद्धेशीं ॥ ५० ॥
 राज्यकामवर्धनी ज्यायी चित्तवृत्ति नृपसद्वंशी ॥ ५१ ॥
 रामप्रियाकर पूजादिक करि नित्यहिं नैमित्तिक दिवसीं ॥ ५२ ॥
 रिपुजन गमनश्रमामुणे भुङ्क्ते श्रमुनी छोती वनवासी ॥ ५३ ॥
 श्रीविश्वामरिथ्या सुकृपेने विजय घडे छो रणि ज्याशी ॥ ५४ ॥
 श्यामलाङ्गी मडिषासुरमर्दनि प्रसन्न ज्याला अडर्निशी ॥ ५५ ॥
 षण्मुभप्रियापरि नेपालाधिपास दिधला स्वसुतेशी ॥ ५६ ॥
 पट्टराणि सिंहेन्द्र मध्यमा अरिथी शरणा यरणाशी ॥ ५७ ॥
 उभवन्तिनी दुसरी गाते ज्याये सद्गुण कीर्तीशी ॥ ५८ ॥
 धर्मवती भुङ्क्ते सूक्ष्मबुद्धिया भुङ्क्ते असावा विषयवंशी ॥ ५९ ॥
 नीतिमतीया राज्य यालवी जनां सौभ्यवी भुङ्क्ते ॥ ६० ॥ ॥ श्री ॥ ॥ ६० ॥
 ज्यायी कान्ता मणिशिवेन्द्रनृपपुत्री राज्य करि चतुर गुणी ॥ ६१ ॥
 पुरुष ऋषभ प्रियाणु जो नृप सार्वभौम कुवराजमणी ॥ ६२ ॥

कनकलताङ्गी दासि धालि सुममाला देविडि धडि करुनी ॥ ६३ ॥
वायस्यतिसम वक्ता जो कीं विद्वांसांसी सन्मानि ॥ ६४ ॥
स्वीथपतीसीं रमेय कल्याणी श्रीवरक्षीगुणभाणी ॥ ६५ ॥
विचित्राम्बरी कीर्ति जयाथी व्यापे शाश्वत दाटोनी ॥ ६६ ॥
अमित सुयश्चित्रा यश्चितासी गाती कविजन कृति करुनी ॥ ६७ ॥
सुभुकर ज्योतिःस्वरुपिणी तनुकान्ति जयाथी लसे धरणी ॥ ६८ ॥
धातुवर्धनी तनुडि असे डा शतायुषी नृप लक्षाणी ॥ ६९ ॥
शुकी नासिका भूषणि भूषित शकुन घडवि करि आर्ति ञणी ॥ ७० ॥
कोसलाधिप पूर्णकृपेनें लाभे सकलेष्टलिं अवनीं ॥ ७१ ॥
रसिकप्रिया बाढतरमेणाम्या श्रीवेङ्कट शुभवाणी ॥ ६ ॥ श्री ॥ ॥ ७२ ॥
स शिवात्मजश्च ऋध्यादीशगणेशो मडेशपटुपुत्रः ।
धन्यः सुरामनामान्वितः शिवं दिशतु निगमशास्त्रज्ञः ॥
श्रीवेङ्कटकृपयेदं द्विसप्तमेलाप्यलक्षां ग्रथितम् ।
वेङ्कटरामभुधेन य वेङ्कटकविना सुमङ्गलं दिशतु ॥
सन् १८८३ ॥ श्रीरस्तु ॥

Encoded by Pallasena Narayanaswami ppnswami gmail.com
Proofread by Pallasena Narayanaswami, Sunder Hattangadi, NA

72 Melakarta by Shri Venkatakavi
pdf was typeset on September 16, 2023

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

